इकाई

7 विविध

विविध में इस बार भी मध्यकाल से लेकर अधुनातन रचनाकारों तक का रस समाहित है। इस इकाई में जहाँ एक ओर दरद दिवाणी मीरा हैं जिन्होंने भक्ति के मार्ग में आई सभी बाधाओं की परवाह न कर प्रियतम कृष्ण की प्राप्ति को अपना एक लक्ष्य बताया है ताकि उसके सहारे भव–सागर पार किया जा सके। वहीं दूसरी ओर ज्ञानमार्गी कवि दादू दयाल हैं जो प्रेम के अलौकिक रूप को अपनी कविता का केन्द्र बनाते हैं। दादू ने अपनी रचनाओं में पंथ के वाद–विवादों से दूर रहकर सभी को समदृष्टि से देखते हुए शाश्वत शांति एवं जन्म मरण रुपी आवागमन से छुटकारा पाने का उपाय बतलाते हुए मानव को सहज–सरल मार्ग को अपनाने का संदेश दिया है।

ज्ञान प्रकाश विवेक आधुनिक लेखक हैं, जो मानवीय संवेदना को बेहद करीब से छूकर महसूस करवाते हैं, तो इसके ठीक विपरीत एक विदेशी रचनाकार **मनरो साकी** भी हैं जिनकी रचना हमें मनुष्य की कुछ अन्य प्रवृत्तियों से मुखातिब करती हैं। इस सबके साथ ही एक रचनाकार के बनने की यात्रा भी है जिसमें आपको तमाम अनुभव मिलेंगे।